© JUN 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 12 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I12-1719040

बाड़मेर जिले में डेयरी उद्योग की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

AKHA RAM
Assistant Professor, Geography Department, IG College, Batadu, Barmer, Rajasthan

सार (Abstract)- बाड़मेर जिला राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित है, जहाँ कृषि की तुलना में पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अधिक महत्वपूर्ण आधार रहा है। जिले की भौगोलिक एवं जलवायवीय परिस्थितियाँ कृषि उत्पादन को सीमित करती हैं, किंतु पशुधन संपदा की प्रचुरता डेयरी उद्योग के विकास की व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में दुग्ध उत्पादन ग्रामीण परिवारों की आय का प्रमुख स्रोत बनता जा रहा है। बाड़मेर जिले में गाय, भैंस, बकरी एवं ऊँट आधारित पशुपालन की समृद्ध परंपरा रही है, जो डेयरी क्षेत्र को मजबूत आधार प्रदान करती है। यद्यपि डेयरी उद्योग में पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं, फिर भी जल संकट, चारे की कमी, पशु स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, आधुनिक तकनीकों की सीमित उपलब्धता तथा विपणन संबंधी समस्याएँ इसके विकास में बाधक हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में बाड़मेर जिले में डेयरी उद्योग की वर्तमान स्थिति, विकास की संभावनाओं तथा प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उचित सरकारी सहयोग, सहकारी डेयरी व्यवस्था, आधुनिक प्रबंधन तकनीकों एवं दुग्ध प्रसंस्करण सुविधाओं के विकास द्वारा डेयरी उद्योग को जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्त आधार बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्दः डेयरी उद्योग, बाड़मेर, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सहकारी डेयरी, मरुस्थलीय क्षेत्र।

I. प्रस्तावना

भारत विश्व का सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देश है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्ध-शुष्क राज्यों में पशुपालन कृषि का पूरक व्यवसाय होने के साथ-साथ आजीविका का प्रमुख साधन भी है। पश्चिमी राजस्थान का बाड़मेर जिला मरुस्थलीय भौगोलिक परिस्थितियों वाला क्षेत्र है, जहाँ वर्षा की अनिश्चितता एवं जल संसाधनों की कमी के कारण कृषि गतिविधियाँ सीमित रहती हैं। ऐसी परिस्थितियों में पशुपालन एवं डेयरी उद्योग ग्रामीण समाज को आर्थिक स्थिरता प्रदान करते हैं।

वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण तथा दुग्ध उत्पादों की बढ़ती मांग ने डेयरी क्षेत्र को एक उभरते हुए उद्योग के रूप में स्थापित किया है। बाड़मेर जिले में पशुधन की पर्याप्त उपलब्धता, स्थानीय पशुपालन परंपराएँ तथा दुग्ध उत्पादों की बढ़ती मांग डेयरी उद्योग के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं। इसके बावजूद अनेक संरचनात्मक एवं प्राकृतिक चुनौतियाँ इस क्षेत्र के समुचित विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं।

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. बाड़मेर जिले में डेयरी उद्योग की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. डेयरी उद्योग के विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
3. डेयरी उद्योग के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
4. डेयरी क्षेत्र के सतत विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

III. अध्ययन क्षेत्र का परिचय

बाड़मेर राजस्थान का पश्चिमी सीमावर्ती जिला है, जो थार मरुस्थल के महत्वपूर्ण भाग में स्थित है। जिले की जलवायु अत्यंत शुष्क एवं गर्म है तथा औसत वार्षिक वर्षा अपेक्षाकृत कम होती है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। जिले में राठी, थारपारकर तथा अन्य स्थानीय नस्लों के पशु पाए जाते हैं, जो दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

(1) विशाल पशुधन संसाधन

बाड़मेर जिले में गाय, भैंस, बकरी एवं ऊँट सहित विविध पशुधन की पर्याप्त उपलब्धता है। पशुधन की यह समृद्धि डेयरी उद्योग के विकास के लिए मजबूत आधार प्रदान करती है।

© JUN 2026 | IRE Journals | Volume 9 Issue 12 | ISSN: 2456-8880
DOI: https://doi.org/10.64388/IREV9I12-1719040

(2) ग्रामीण रोजगार का सशक्त माध्यम

डेयरी उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए यह नियमित आय का महत्वपूर्ण स्रोत है।

(3) दुग्ध उत्पादों की बढ़ती मांग

शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा जीवन स्तर में सुधार के कारण दूध एवं दुग्ध उत्पादों की मांग निरंतर बढ़ रही है। यह स्थिति डेयरी उद्योग के विस्तार के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है।

(4) महिला सशक्तिकरण की संभावना

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती हैं। डेयरी गतिविधियों के विस्तार से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी एवं आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है।

(5) सहकारी डेयरी समितियों का विकास

सहकारी डेयरी समितियाँ पशुपालकों को उचित मूल्य, तकनीकी सहायता तथा विपणन सुविधाएँ उपलब्ध कराकर डेयरी उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

(6) मूल्य संवर्धित दुग्ध उत्पादों की संभावना

दूध के अतिरिक्त घी, पनीर, दही, मावा एवं अन्य दुग्ध उत्पादों का उत्पादन कर अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है। इससे स्थानीय स्तर पर लघु उद्योगों का विकास भी संभव है।

(7) सरकारी योजनाओं का सहयोग

राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम तथा पशुपालन विभाग की विभिन्न योजनाएँ डेयरी उद्योग के विकास को प्रोत्साहित कर रही हैं।

(8) मरुस्थलीय क्षेत्र में वैकल्पिक आजीविका

अनिश्चित वर्षा एवं कृषि जोखिमों के कारण डेयरी उद्योग बाड़मेर जैसे मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थायी एवं वैकल्पिक आजीविका का प्रभावी साधन बन सकता है।

IV. बाड़मेर जिले में डेयरी उद्योग की चुनौतियाँ

(1) जल संकट की समस्या

बाड़मेर जिला अल्प वर्षा एवं बार-बार पड़ने वाले सूखे के लिए जाना जाता है। पशुओं हेतु पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराना डेयरी उद्योग की सबसे बड़ी चुनौती है।

(2) चारे एवं पशु आहार की कमी

मरुस्थलीय परिस्थितियों के कारण हरे चारे का उत्पादन सीमित है। सूखे की स्थिति में चारे की उपलब्धता और अधिक प्रभावित होती है, जिससे दुग्ध उत्पादन में कमी आती है।

(3) निम्न दुग्ध उत्पादकता

स्थानीय पशु नस्लों की दुग्ध उत्पादन क्षमता अपेक्षाकृत कम होने तथा वैज्ञानिक पशुपालन तकनीकों के सीमित उपयोग के कारण प्रति पशु दुग्ध उत्पादन कम रहता है।

(4) पशु चिकित्सा सुविधाओं का अभाव

ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में पशु चिकित्सालयों तथा विशेषज्ञ सेवाओं की कमी पशुधन के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता को प्रभावित करती है।

(5) दुग्ध संग्रहण एवं शीत श्रृंखला की कमी

कई क्षेत्रों में दुग्ध संग्रहण केन्द्रों, चिलिंग प्लांट एवं शीत परिवहन सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण दुग्ध की गुणवत्ता एवं विपणन प्रभावित होता है।

(6) विपणन संबंधी समस्याएँ

संगठित बाजार व्यवस्था के अभाव में अनेक पशुपालकों को दूध का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता तथा वे स्थानीय व्यापारियों पर निर्भर रहते हैं।

(7) वित्तीय संसाधनों की कमी

छोटे पशुपालकों के पास आधुनिक डेयरी इकाइयों की स्थापना, उन्नत नस्लों की खरीद एवं पशु आहार की व्यवस्था हेतु पर्याप्त पूँजी उपलब्ध नहीं होती।

(8) जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा एवं बार-बार सूखे की घटनाएँ पशुओं के स्वास्थ्य तथा दुग्ध उत्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं।

(9) तकनीकी ज्ञान का अभाव

आधुनिक डेयरी प्रबंधन, संतुलित पशु आहार, कृत्रिम गर्भाधान एवं पशु स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का अभाव उत्पादन क्षमता को सीमित करता है।

(10) संगठित डेयरी नेटवर्क का सीमित विस्तार

जिले के अनेक गाँव अभी भी संगठित दुग्ध संग्रहण एवं सहकारी डेयरी नेटवर्क से पूर्ण रूप से नहीं जुड़े हैं, जिससे डेयरी क्षेत्र की विकास क्षमता प्रभावित होती है।

V. निष्कर्ष

बाड़मेर जिले में डेयरी उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने, रोजगार सृजन करने तथा किसानों की आय बढ़ाने की अपार संभावनाएँ रखता है। यद्यपि जल संकट, चारे की कमी, पशु स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव एवं विपणन संबंधी समस्याएँ इसके विकास में बाधक हैं, फिर भी उचित सरकारी नीतियों, आधुनिक तकनीकों, सहकारी समितियों तथा आधारभूत सुविधाओं के विकास द्वारा डेयरी उद्योग को जिले की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

[1] Bhalla, L. R. (2020). *Rajasthan ka Samagra Bhugol*. Ajmer: Kuldeep Publications.

[2] Government of Rajasthan. (2024). *Rajasthan Statistical Abstract 2023-24*. Jaipur: Directorate of Economics and Statistics.

[3] Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying. (2024). *Basic Animal Husbandry Statistics*. New Delhi: Government of India.

[4] National Dairy Development Board. (2024). *Annual Report 2023-24*. Anand: NDDB.

[5] Rajasthan Cooperative Dairy Federation. (2024). *Dairy Development in Rajasthan*. Jaipur: RCDF.

[6] Saxena, H. M. (2022). *Rajasthan Ka Bhugol*. Jaipur: Rajasthan Hindi Granth Academy.

[7] Sharma, S. S. (2021). *Rajasthan Ka Bhugol*. Jaipur: Rajasthan Hindi Granth Academy.